Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR, 2020, VOL- 7/58

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों की जीवनशैली को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन

डॉ.मूलचन्द मीना[1] & प्रो.सरोज गर्ग [2]

[1]पी.डी.एफ. रिसर्च फेलो. लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सी.टी.ई. डबोक, उदयपुर राज.
[2]प्रो. लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सी.टी.ई. डबोक, उदयपुर राज.

Abstract

The present study was carried out to analyze A Study of Lifestyle, Depression and Adjustment of Students Preparing for Professional Courses through COACHING. This survey includes Total 1200 students of Kota city. Sample was randomaly selected for this study. The result indicates that also more factors affected by family, social, trade seeking, health, career and acadmic of Students lifestyle.

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

1.प्रस्तावना –

शिक्षा का उद्देश्य बालक को सभ्य, सुसंस्कृत व नैतिक मूल्यों से युक्त बनाना हैं। किसी भी विद्यार्थी की कोई न कोई अभिलाषा होती है चाहे वह व्यावसायिक हो, चाहे शैक्षणिक जो बालक वास्तविकताओं व आकांक्षाओं में शीघ्र समन्वय स्थापित कर लेते है और वहीं सफल होते हैं।

जीवनशैली का अर्थ – जीवनशैली एक व्यक्ति समूह या संस्कृति के हितों, विचारों, व्यवहारों आर व्यवहारिक रूझान है। आस्ट्रेलिया के मनोवैज्ञानिक ''अल्फ्रेड एडलर'' ने एक व्यक्ति के मूल चरित्र के रूप में बालू के रूप में, स्थापित'' के अर्थ के साथ शब्द का परिचय दिया, उदाहरण के लिए 1929 पुस्तक ''द कैस ऑफ मिस आर'' में। **''कॉलिन्स इंग्लिश डिक्शनरी''** परिभाषित करता है कि 'जीवनशैली एक विशेष व्यक्ति या समूह से जुड़े, व्यवहार, आदतों या संपत्तियों के एक सेट के रूप में, आपकी भोजन विकल्प गतिविधि स्तर और व्यवहार के आधार पर आपकी जीवनशैली स्वस्थ या अस्वास्थ्यकर, हो सकती है, एक सकारात्मक जीवनशैली आपको खुशी ला सकती है, जबकि एक नकारात्मक जीवनशैली उदासी, बीमारी और अवसाद से हो सकती है।''

विद्यार्थी जीवनशैली –

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विद्यार्थी जीवन साधना और तपस्या का जीवन है। यह काल एकाग्रचित होकर अध्ययन और ज्ञान चिंतन का है। यह काल सांसारिक भटकाव से स्वयं को दूर रखने का काल है। विद्यार्थियों के लिए यह जीवन अपने भावी जीवन को ठोस नींव प्रदान कर सुनहरा अवसर है।

आधुनिक जीवनशैली – आधुनिक जीवनशैली ने हमें नैतिकता, संस्कार, आदर, सम्मान, अच्छी सोच, नींद और न जाने ऐसी ही कितनी ही बहुमूलय चीजों से हमें दूर करके रखा हुआ है। जिसका हमारी जिन्दगी में शामिल होना बहुत आवश्यक है। आज ग्लोबलाइजेशन, इंटरनेट और तकनीकी में आ रहे बदलाव ने समाज के साथ खासकर विद्यार्थियों व युवाओं को इस तरह प्रभावित किया है कि कुछ वर्षों में ही जीवनशैली में जबरदस्त बदलाव आ गया है।

आज हम फास्ट लाइफ जीना चाहते है। मेहनत कम होने के साथ–साथ आप हमारा रहन–सहन, खान–पान का स्तर भी कम हो गया है। फास्ट फूड ज्यादा खाना पसंद करते है। यदि माता–पिता उससे कुछ कहते है, तो उनसे झगड़ा करते है। आदि कारणों से उनकी जीवनशैली पर बहुत अधिक दुष्प्रभाव पड़ रहा है जिससे वे शारीरिक व माानसिक बिमारियों से ग्रसित हो रहे है। यदि इस समस्या पर अभिभावकों व समाज सुधारकों ने समय पर ध्यान नहीं दिया तो यह आने वाली भावी पीढ़ी को नष्ट कर देगी। वर्तमान समय में तेजी से आ रहे बदलाव, बढ़ती प्रतिस्पर्धा तथा मां–बाप की अति महत्वाकांक्षाओं के रहते बच्चे अपना बचपन और लड़कपन भूलकर सिर्फ किताबी कीड़े बनकर रहे गए।

आज भी आधुनिक फैशनेबल जीवनशैली ने किशोर विद्यार्थियों के जीवन को अपने आगोश में इस तरह जकड़ लिया है कि वे चाहकर भी इस आधुनिक चकाचौंध से अपने को मुक्त नहीं कर पा रहे है। किशोर–किशोरियों के जीवन जीने का तरीका ही बदल गया है। घर हो बाहर हमेशा अपना ध्यान फैशन पर ही रहता है। ऐसी स्थिति में उनका मन विचलित होकर कुछ गलत कार्यों में लग जाता है। पाश्चात्यीकरण जीवनशैली के अंधानुकरण से किशोर विद्यार्थियों का बालमन भटक रहा है। आये दिन घटित होने वाले बलात्कार, लड़कियों के साथ छेड़कानी करना, भद्दे एवं अश्लील शब्दों का प्रयोग करना, नशीले व मादक पदार्थों का सेवन करना आदि आधुनिक जीवनशैली का ही परिणाम है। जिससे छात्रों के मन में पाश्विक प्रवृत्ति का विकास हो रहा है। आज के विद्यार्थी देर रात तक दोस्तों के साथ होटल या क्लब में पाटियां मनाते रहते है और नशीली वस्तुओं का सेवन कर घर पर आते है। सुबह देर तक सोते रहते है, नियमित रूप से व्यायाम नहीं करते है, फास्टफुट ज्यादा खाना पसंद करते है, यदि माता–पिता उनसे कुछ कहते है तो उनसे झगड़ा करते है आदि कारणों से उनकी जीवनशैली बहुत अधिक दुष्प्रभाव पड़ रहा है जिससे वे

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शारीरिक व मानसिक बीमारियों से ग्रसित हो रहे है। यदि इस समस्या पर अभिभावकों व समाज सुधारकों ने समय पर ध्यान नहीं दिया तो यह आने वाली पीढ़ी को नष्ट कर देगी। आज की युवा पीढ़ी को सबसे बड़ा खतरा अत्याधुनिक उपकरण टी.वी., मोबाइल आदि से है और इसका गलत परिणाम बच्चों की मानसिक बुद्धि पर पड़ता है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थियों का प्रदर्शन कोचिंग के माध्यम से प्राप्त मार्गदर्शन पर भी बहुत सीमा पर निर्भर रहता है। कई बार यह भी देखा गया है कि पढ़ाने की कार्यशैली, पाठ्यक्रम संचालन आदि सभी पक्ष तो सुदृढ़ होते है लेकिन अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों के मानसिक तनाव, परेशानी या कठिनाई को नजर अन्दाज कर दिया जाता है। इसका सीधा प्रभाव विद्यार्थी की तैयारो एवं अध्ययन पर पड़ता है।

2.समस्या का औचित्य –

राजस्थान में अभी तक इस ज्वलन्त समस्या पर अधिस्तानक स्तर पर कोई कार्य नहीं हुआ हैं। आधुनिक जीवनशैली प्रत्येक क्षण में छात्रों को अपने आगोश में लेकर अपनी इहलीला को समाप्त करने की ओर धकेल रही हैं। किशोर अवस्था में विद्यार्थियों पर सबसे ज्यादा प्रभाव समाज का पड़ता हैं। समाज का जैसा वातावरण, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, जीवन जीने के तौर तरीके होंगे वैसा ही बालकों के जीवन पर प्रभाव पड़ता है | विद्यार्थियों को समाज या विद्यालय के वातावरण के साथ समायोजन करने पर ही जीवन में सफलता प्राप्त होती है | आज समाज आधुनिकता की पाश्चात्यीकरण सभ्यता की ओर अग्रसर हो रहा है इसीलिए किशोर विद्यार्थी आधुनिक जीवनशैली को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास कर रहे | आधुनिक जीवनशैली की चकाचौंध में विद्यार्थी या बालक इतने लीन हो गये है कि वे अपने लक्ष्य से भटकर नशीले पदार्थों का सेवन करने लगे है जिससे उनके केरियर जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है तथा समाज द्वारा उपेक्षित होने के डर से तनावग्रसित होकर वे स्वयं को समाप्त कर लेते हैं। उनमें आत्मविश्वास की कमी होने लगती है एवं वे स्वयं को हीन दृष्टि से देखने लग जाते हैं। वर्तमान समय में विद्यर्थियों की आवश्यकताऐ, आकांक्षाऐ और इच्छाऐ तीव्र गति से बढ़ती जा रही हैं लेकिन जब वह इनको पूरा नहीं कर पाते हैं तो वे या तो असफल हो जाते है या अवसादग्रस्त हो जाते हैं जिसका सीधा असर बच्चों की जीवन ौली पर पड़ता हैं। उच्च प्रतीकात्मक जीवनशैली के कारण आज के किशोर विद्यार्थियों में स्वछन्द प्रवृति का तथा घर, परिवार, विद्यालय, समाज में फैशनेबल प्रवृति का ज्यादा विकास होने लगा है जिसके कारण वह अपने माता-पिता, बड़े बुजुर्गों व गुरुजनों का सम्मान एवं आदर करना ही भूल गया है| ऐसे युवावर्ग को सही रास्ते पर लाने का कार्य केवल अध्यापक ही कर सकता हैं जो अपने

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अमृतरूपी ज्ञान संयम व मधुर वाणी, कोमल व्यवहार, अनुभव, अच्छा मार्गदर्शन एवं आशीष वचनों से युवाओं या विद्यार्थियों में इतना जोश व उत्साह भरता है जिससे प्रेरित होकर विद्यार्थी संस्कारित जीवनशैली को अपनाने की ओर अग्रसर हो सके हैं। आज के किशोर विद्यार्थी संसार की बढ़ती हुई आधुनिकता, भौतिकता व व्यावसायिक चकाचौंध से प्रभावित होकर कम से कम समय में अधिक से अधिक पाने की चाह, गलाकाट प्रतियोगिता, सहनशीलता की कमी, निरन्तर बढ़ते दबाव, स्टेट्स सिंबल के चलते तनाव का शिकार बन रहे हैं। अत: शोधकर्ता द्वारा इस समस्या के कारणों का पता लगाने हेतु समस्या का चयन किया गया है । इस दृष्टि से समस्या का औचित्य सार्थक सिद्ध होता हैं। **''जीवन को देखने का ढंग ही जीवन का आधार बन सकता हैं।'**

3. शोध के उद्देश्य –

1 व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले निम्नांकित समूहों की जीवनशैली को ज्ञात करना :–

(अ) समग्र विद्यार्थियों की जीवनशैली

(ब) मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली

(स) छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली

4. शोध परिकल्पनाएँ –

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवन शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले छात्र एवं छात्राओं की जीवन शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. **न्यादर्श** :– न्यादर्श के रूप में शोधकर्ता द्वारा इस शोध को पूरा करने के लिए भौक्षणिक नगरी कोटा जिले मे कोचिंग लेने वाले कुल 1200 छात्र–छात्राओं का यादृच्छिक विधि द्वारा चुनाव किया गया।

6. शोध अध्ययन का परिसीमन – प्रस्तुत शोध के सीमांकन हेतु कोटा जिले का चयन किया गया है जिसमे मेडिकल व इन्जिनियरिंग की कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

7. शोधविधि – प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

8. उपकरण :– व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों की जीवनशैली को प्रभावित करने वाले कारकों को जानने के लिए स्वनिर्मित "जीवन ैली प्रमापनी" का प्रयोग किया गया।

9. शोध सांख्यिकी – प्रस्तुत भाोध में मध्यमान, मानक–विचलन व टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

10. प्रदत्त–वि□लेशण –

उद्देश्य 1. कोचिंग लेने वाले समग्र विद्यार्थियों की जीवनशैली के मध्यमान व मानक विचलन का विश्लेषण :–

सारणी संख्या 1

कोचिंग लेने वाले समग्र विद्यार्थियों की जीवनशैली के मध्यमान प्राप्तांक

क्र.सं.	जीवनशैली के क्षेत्र	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्रतिशत मध्यमान
1.	स्वस्थ जीवनशैली	23.2	3.9	70.4%
2.	सामाजिक जीवनशैली	20.5	3.6	68.2%
3.	फैशनेबल जीवनशैली	16.9	4.6	56.2%
4.	केरियर के प्रति दृष्टिकोण	20.1	4.0	66.9%
5.	अकादमिक जीवनशैली	17.5	3.1	64.8%
6.	पारिवारिक जीवनशैली	17.3	3.1	72.2%
7.	व्यक्तिगत जीवनशैली	16.8	3.2	69.9%
8.	अन्य मनोवैज्ञानिक कारक	14.2	3.6	59.3%
	(N=1200)कुल योग	**146.5**	**18.7**	**66%**

उपरोक्त सारणी 1 को समेकित रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों की जीवनशैली का कुल मध्यमान 146.5, मानक विचलन 18.7 व प्रतिशत मध्यमान 66 प्रतिशत प्राप्त हुआ है जो औसत स्तर से थोड़ा ज्यादा है।

क्षेत्रानुसार जीवनशैली का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि जीवनशैली का सर्वाधिक स्तर पारिवारिक क्षेत्र में 72.20 प्रतिशत प्राप्त हुआ है तथा सबसे कम स्तर फैशनेबल क्षेत्र में 56.20 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। अन्य क्षेत्रों में स्वस्थ जीवनशैली 70.4 प्रतिशत, व्यक्तिगत जीवनशैली 69.9 प्रतिशत, सामाजिक जीवनशैली 68.2 प्रतिशत, केरियर के प्रति दृष्टिकोण 66.9 प्रतिशत, अकादमिक जीवनशैली 64.8 प्रतिशत, अन्य मनोवैज्ञानिक कारक 59.3 प्रतिशत के साथ औसत स्तर स उच्च स्तर की जीवनशैली प्राप्त हुई है। इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों की जीवनशैली उच्च स्तर की पायी गई है जिसका मुख्य कारण स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह केरियर की अनिश्चितता, सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण,

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्यक्तिगत ईच्छा एवं आकांक्षा, आधुनिक फैशनेबल रहन–सहन, खानपान तथा अन्य मनोवैज्ञानिक कारणों को माना है। जिसका प्रभाव उनकी उपलब्धि एवं अवसाद स्तर पर नकारात्मक पड़ता है। इसीलिए जैसे–जैसे विद्यार्थियों की उच्च स्तर की जीवनशैली जीने की इच्छा बढ़ती जाती हैं वैसे–वैसे ही उनकी समायोजन क्षमता कम होती जाती है। जिससे उनमें अवसाद की समस्या तीव्र गति से बढ़ रही है।

(ब) कोचिंग लेने वाले मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली के मध्यमान व मानक विचलन का विश्लेषण :–

सारणी संख्या 2

कोचिंग लेने वाले मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली के मध्यमान प्राप्तांक

क्र.सं.	जीवनशैली के क्षेत्र	मेडिकल विद्यार्थी (N=600)			इंजीनियरिंग विद्यार्थी (N=600)		
		प्रतिशत मध्यमान	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्रतिशत मध्यमान	मध्यमान	प्रमाप थ्वचलन
1.	स्वस्थ जीवनशैली	71.5%	23.6	3.6	69.4%	22.9	4.1
2.	सामाजिक जीवनशैली	70.0%	21.0	3.8	66.3%	19.9	3.2
3.	फैशनेबल जीवनशैली	58.8%	17.6	4.7	53.6%	16.1	4.5
4.	केरियर के प्रति दृष्टिकोण	68.4%	20.5	4.1	65.4%	19.6	3.8
5.	अकादमिक जीवनशैली	65.4%	17.7	3.0	64.2%	17.3	3.3
6.	पारिवारिक जीवनशैली	73.3%	17.6	2.8	71.1%	17.1	3.3
7.	व्यक्तिगत जीवनशैली	71.4%	17.1	3.0	68.5%	16.4	3.3
8.	अन्य मनोवैज्ञानिक कारक	61.5%	14.8	3.6	57.1%	13.7	3.5
	कुल योग	**67.5%**	**149.9**	**16.7**	**64.4%**	**143.0**	**19.9**

उपरोक्त सारणी 2 को समेकित रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि कोचिंग लेने वाले मेडिकल विद्यार्थियों की जीवनशैली का कुल प्रतिशत मध्यमान 67.5 प्रतिशत प्राप्त हुआ है जो इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली के प्रतिशत मध्यमान 64.4 प्रतिशत से ज्यादा है। अतः इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली की अपेक्षा मेडिकल विद्यार्थियों की जीवनशैली संतुलित स्तर की पायी गई है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की पारिवारिक जीवनशैली 73.3व 71.1 प्रतिशत के साथ उच्च स्तर की पायी गयी है तथा शेष क्षेत्रों में भी इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली की अपेक्षा मेडिकल विद्यार्थियों की जीवनशैली स्वस्थ 71.5, व्यक्तिगत 71.4, सामाजिक 70, केरियर 68.4, अकादमिक 65.4, मनोवैज्ञानिक 61.5 प्रतिशत के साथ उच्च स्तर की ही प्राप्त हुई है। इससे पता चलता है कि मेडिकल के विद्यार्थी अपने जीवन को बहुत ही सहनशीलता, अनुशासन, धार्मिक एवं संजीदा रूप से जीना पसन्द करते हैं। उनका रहन–सहन, खान–पान, बोलचाल, सामाजिक स्तर, पारिवारिक वातावरण, व्यक्तिगत जीवन, केरियर की चिंता एवं अकादमिक उपलब्धि भी इंजीनियरिंग विद्याथियों की अपेक्षा अच्छी रहती है। लेकिन इस प्रकार की जीवनशैली से मेडिकल विद्यार्थियों में एकाकीपन, हीन भावना एवं सामाजिक अलगाव की प्रवृति ज्यादा बढ़ने लगती है जिससे वे अवसादग्रस्त हो जाते है और उनके समाज व परिवार के साथ समायोजन करने में परेशानी होती है इसीलिए उनकी जीवनशैली व्यक्तिगत एवं एकाकी ज्यादा पायी जाती है।

(स) कोचिंग लेने वाले छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली के मध्यमान व मानक विचलन का विश्लेषण :–

सारणी संख्या 3

कोचिंग लेने वाले छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली के मध्यमान प्राप्तांक

क्र.सं.	जीवनशैली के क्षेत्र	छात्र(N=600)			छात्रा(N=600)		
		प्रतिशत मध्यमान	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्रतिशत मध्यमान	मध्यमान	प्रमाप विचलन
1.	स्वस्थ जीवनशैली	68.8	23.8	3.5	72.1	22.7	4.1
2.	सामाजिक जीवनशैली	64.9	21.4	3.2	71.5	19.5	3.6
3.	फैशनेबल जीवनशैली	52.8	17.9	4.5	59.7	15.8	4.5
4.	केरियर के प्रति दृष्टिकोण	65.5	20.5	3.9	68.3	19.6	4.0
5.	अकादमिक जीवनशैली	63.2	18.0	2.7	66.5	17.1	3.4
6.	पारिवारिक जीवनशैली	68.7	18.2	2.5	75.7	16.5	3.4
7.	व्यक्तिगत जीवनशैली	68.2	17.2	2.9	71.6	16.4	3.4
8.	अन्य मनोवैज्ञानिक कारक	56.8	14.8	3.5	61.8	13.6	3.6
	कुल	**63.6%**	**151.8**	**14.3**	**68.4%**	**141.2**	**20.9**

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपरोक्त सारणी 3 को समेकित रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि कोचिंग लेने वाली छात्राओं की जीवनशैली का कुल प्रतिशत मध्यमान 68.4 तथा छात्रों की जीवनशैली का कुल प्रतिशत मध्यमान 63.6 प्रतिशत प्राप्त हुआ है जो औसत स्तर से थोड़ा ज्यादा है। इससे स्पष्ट होता है कि छात्रों की अपेक्षा छात्राऐ अपनी दिनचर्या व जीवनशैली के प्रति ज्यादा सजग एवं सचेत रहती है। क्षेत्रानुासर तुलना करने पर भी छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की पारिवारिक जीवनशैली 75.7 प्रतिशत, स्वस्थ जीवनशैली 72.1, व्यक्तिगत जीवनशैली 71.6, सामाजिक 71.5, केरियर के प्रति दृष्टिकोण 68.3, अकादमिक 66.5, मनोवैज्ञानिक 61.8, तथा फैशनेबल जीवनशैली 59.7 प्रतिशत के साथ श्रेष्ठस्तर की पायी गई है। इससे पता चलता है कि छात्राऐ अपने जीवन को बहुत ही स्वस्थ, सामाजिक, फैशनेबल, केरियर के प्रति सचेत, अकादमिक उपलब्धि के प्रति सचेत, पारिवारिक जीवन, व्यक्तिगत जीवन एवं अन्य मनोवैज्ञानिक कारकों के साथ मॉर्डन लाइफ स्टाईल से जीना पसन्द करती है। छात्राऐ बाजार एवं सोशल मीडिया पर आने वाली हर नये ब्राण्ड को देखना, छूना, महसूस करना एवं उससे बहुत ज्यादा आकर्षित होती है।

परिकल्पना 1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवन शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 4
मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

क्र. सं.	जीवनशैली के क्षेत्र	मेडिकल विद्यार्थी (N=600)		इंजीनियरिंग विद्यार्थी (N=600)		टी–मान	.05 / .01 स्तर पर सार्थक
		मध्यमान	प्रमाप विचलन	मध्यमान	प्रमाप विचलन		
1.	स्वस्थ जीवनशैली	23.6	3.6	22.9	4.1	3.12	0.05
2.	सामाजिक जीवनशैली	21.0	3.8	19.9	3.2	5.49	0.05
3.	फैशनेबल जीवनशैली	17.6	4.7	16.1	4.5	5.85	0.05
4.	केरियर के प्रति दृष्टिकोण	20.5	4.1	19.6	3.8	3.87	0.01
5.	अकादमिक जीवनशैली	17.7	3.0	17.3	3.3	1.82	0.05
6.	पारिवारिक जीवनशैली	17.6	2.8	17.1	3.3	2.96	0.05
7.	व्यक्तिगत जीवनशैली	17.1	3.0	16.4	3.3	3.80	0.05
8.	अन्य मनोवैज्ञानिक कारक	14.8	3.6	13.7	3.5	5.08	0.05
	कुल	**149.9**	**16.7**	**143.0**	**19.19**	**6.44**	0.05

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपरोक्त सारणी संख्या 4 से स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली की तुलना करने पर 'टी' का मान 6.44 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 1198 (df=1198) के सारणीमान 0.05 स्तर पर 1.96 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 से ज्यादा है। इससे स्पष्ट होता है कि मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली में सार्थक अन्तर पाया गया है। मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली का क्षेत्रानुसार तुलना करने पर स्वस्थ, सामाजिक, फैशनेबल, केरियर, अकादमिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों के साथ जीवनशैली का टी–मान क्रमशः 3.12, 5.49, 5.85, 3.87, 1.82, 2.96, 3.80, 5.08 पाया गया है। अकादमिक क्षेत्र में मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली का 'टी' मान 1.82 'टी' सारणीमान (df=1198) 1.96 से कम पाए जाने के कारण मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। लेकिन स्वस्थ, सामाजिक, फैशनेबल, केरियर, पारिवारिक, व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में जीवनशैली का 'टी' मान साराणीमान 2.58 से ज्यादा होने से मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली में सार्थक अन्तर देखने को मिलता है। इससे पता चलता है कि मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की अकादमिक जीवनशैली को लगभग एक समान ही है लेकिन अन्य क्षेत्रों में उनकी जीवनशैली में बहुत अन्तर पाया गया है।

मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली का 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर अधिक पाये जाने के कारण परिकल्पना 1 को अस्वीकृत किया जाता ह।

2. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले छात्र एवं छात्राओं की जीवन शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारणी संख्या 5

कोचिंग लेने वाले छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली का 'टी' परीक्षण के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	जीवनशैली के क्षेत्र	छात्र(N=600)		छात्रा (N=600)		टी–मान	.05/.01 स्तर पर सार्थक
		मध्यमान	प्रमाप विचलन	मध्यमान	प्रमाप विचलन		
1.	स्वस्थ जीवनशैली	23.8	3.5	22.7	4.1	5.00	0.05
2.	सामाजिक जीवनशैली	21.4	3.2	19.5	3.6	9.98	0.05
3.	फैशनेबल जीवनशैली	17.9	4.5	15.8	4.5	7.95	0.05
4.	केरियर के प्रति दृष्टिकोण	20.5	3.9	19.6	4.0	3.71	0.05
5.	अकादमिक जीवनशैली	18.0	2.7	17.1	3.4	4.97	0.05
6.	पारिवारिक जीवनशैली	18.2	2.5	16.5	3.4	9.91	0.05
7.	व्यक्तिगत जीवनशैली	17.2	2.9	16.4	3.4	4.46	0.05
8.	अन्य मनोवैज्ञानिक कारक	14.8	3.5	13.6	3.6	5.88	0.05
	कुल	**151.8**	**14.3**	**141.2**	**20.9**	**10.25**	0.05

उपरोक्त सारणी संख्या 5 से स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली की तुलना करने पर 'टी' मान 10.25 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 1198 (df=1198) के सारणीमान 0.05 स्तर पर 1.96 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 से बहुत ज्यादा है। इससे स्पष्ट होता है कि कोचिंग करने वाले छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली में सार्थक अन्तर होता है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर स्वस्थ, सामाजिक, फैशनेबल, केरियर, अकादमिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली का टी–मान क्रमशः 5.00, 9.98, 7.95, 3.71, 4.97, 9.91, 4.46, 5. 88 पाया गया है। जो 'टी' मान 2.58 से बहुत ज्यादा होने से उनकी जीवनशैली में सर्वाधिक अन्तर देखा गया है। छात्र एवं छात्राओं की केरियर एवं व्यक्तिगत जोवनशैली में कम अन्तर देखा गया है जबकि सामाजिक एवं पारिवारिक जीवनशैली में सर्वाधिक अन्तर देखने को मिलता है।

कोचिंग लेने वाले छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली का टी–मान 0.05 स्तर पर सर्वाधिक सार्थक अन्तर पाये जाने के कारण परिकल्पना 2 को अस्वीकृत किया जाता है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

11. निश्कर्श –

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों की जीवनशैली का विश्लेषण क्षेत्रानुसार किया गया जिसमें विद्यार्थियों की जीवनशैली उच्च स्तर की पायी गयी है। सर्वाधिक उच्च स्तर की जीवनशैली पारिवारिक, स्वस्थ एवं व्यक्तिगत क्षेत्र में पायी गयी है जबकि निम्न स्तर की जीवनशैली फैशनेबल एवं मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में पायी गयी तथा शेष क्षेत्रों में औसत स्तर से ज्यादा प्राप्त हुई है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी औसत स्तर की जीवनशैली से जीना पसन्द करते हैं।

2. मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली का क्षेत्रानुसार मापन एवं विश्लेषण करने पर इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की अपेक्षा मेडिकल विद्यार्थियों की जीवनशैली उच्च स्तर की पायी गयी है। सर्वाधिक उच्च स्तर की जीवनशैली, पारिवारिक, स्वस्थ, व्यकितगत एवं सामाजिक क्षेत्र में तथा निम्न स्तर की जीवनशैलो फैशनेबल एवं मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में प्राप्त हुई शेष अन्य क्षेत्रों में उच्च स्तर की जीवनशैली प्राप्त हुई है। इससे स्पष्ट है कि मेडिकल के विद्यार्थी उच्च स्तर की जीवनशैली से जीना पसन्द करते हैं।

3. छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली का क्षेत्रानुसार विश्लेषण करने पर छात्रों को अपेक्षा छात्राओं की जीवनशैली उच्च स्तर की प्राप्त हुई है। स्वस्थ, सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत जीवनशैली में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की जीवनशैली उच्च स्तर की पायी गयी है तथा फैशनेबल केरियर एवं अकादमिक जीवनशैली में भी छात्राऐं छात्रों से आगे ही है। इससे स्पष्ट है कि छात्राऐं हर क्षेत्र में अपनी जीवनशैली को छात्रों की अपेक्षा बहुत ही आनन्द, उत्साह एवं हर्ष के साथ जीना पसन्द करती है।

4. मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की जीवनशैली का 'टी'मान सारणीमान से ज्यादा प्राप्त होने से सर्वाधिक सार्थक अन्तर देखा गया है इसलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर मेडिकल व इंजीनियरिंग विद्यार्थियों की अकादमिक जीवनशैली का टी–मान 1.82 सारणीमान 2.58 से कम प्राप्त होने से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया इसीलिए परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

5. छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली का टी–मान ज्यादा प्राप्त होने से सर्वाधिक सार्थक अन्तर देखा गया है, इसलिए परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। क्षेत्रानुसार तुलना करने पर भी छात्र एवं छात्राओं की जीवनशैली में सर्वाधिक अन्तर पाये जाने से परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अस्थाना विपिन विजया श्रीवास्तव (2011) '' शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी।'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

2. निधि अस्थाना व अग्रवाल (2012) ''मनोविज्ञान व शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन।'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

3 .भट्नागर अनुराग एवं ए. बी. (2013) '' शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली।'' आर लाल बुक डिपो, मेरठ।

Websidtes -

www.lifestyle.com
www. hodhaganga.com
www.indian desrtation.com
www.raj.partika.com

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies